न कालीघाट में काली मिले .....बिना सेटिंग के

अपना-अपना काम खत्म करके सबको कालीघाट मेट्रो के पास मिलना था क्योंकि गरियाहाट में कल सपरिवार शॉपिंग का प्लान था। भाषा परिषद की लाइब्रेरी से अपना काम खत्म करके मैं और जेटकिंग से अपनी क्लास खत्म करके मेरा भाई-- हम एक्साइड के पास मिले और रवींद्र सदन मेट्रो से 2:15 के करीब कालीघाट की तरफ चले। 10 मिनट में पहुँच भी गये। लेकिन बाकी लोगों को पहुँचने में थोड़ा समय लगने वाला था। भाई इस महानगर में नया है और समय काटने के लिए सड़क किनारे खड़े होने से कम उबाऊ कुछ करना था इसलिए मैंने उसे पास ही में पड़ने वाले मशहूर काली मंदिर 'कालीघाट' के दर्शन दूर से करा देने की सोची। ये बस समय काटने के लिए ही था क्योंकि न मेरे भाई को और ना ही मुझे और ना ही मेरे घर में किसी को श्रद्धावश मंदिर-वंदिर जाने की आदत है। लेकिन कोलकाता आये और कालीघाट न घूमे तो क्या घूमे(हालाँकि वहाँ देखने लायक मुझे कुछ भी नहीं दिखता सिवाय रंग-बिरंगे लेकिन एक ही जैसे लोगों के) जैसी मान्यता रखने वाले या श्रद्धालु किस्म के रिश्तेदारों को कालीमंदिर के दर्शन कराने के क्रम में हम भी दर्शन कर लेते हैं। गाँव में होने वाली शादियों में देखा है कि जब किसी की बारात निकलती है, 'परिछावन' होता है तब दुल्हे की करीबी रिश्तेदार स्त्रियाँ गीत गाते जाने के साथ-साथ मुट्ठियों में भर-भर के जो चिल्लर और चवनिया चॉकलेट लुटाती चलती है, उन्हें लूटने के लिए छोटे-छोटे बच्चे जिस तरह लपकते हैं उसी तरह 'ग्राहकों' मेरा मतलब है श्रद्धालुओं को या मंदिर के आस पास से गुजरने वाले किसी भी व्यक्ति को देख कर छोटी छोटी दुकान सजा कर बैठे पंडे या एजेंट लपकते हैं। छीना-झपटी, मोल-भाव, हुज्जत, कंफ्यूजन, गंदगी और कीचड़ भरे परिवेश में 5 मिनट रुकना भी मेरे लिए असंभव होता है और उसमें भी चप्पल-जूते उतार कर उस जगह से गुजरना पड़े जहाँ बलि चढ़ाए गये बकरों के रक्त के नये-पुराने धब्बे दिखते हों तो क्या आश्चर्य होगा कि मैं उस मंदिर के आस-पास से गुजरने से भी गुरेज करूँ। लगभग 9 साल बाद मन में यह बात आयी थी कि बाहर ही बाहर भाई को मंदिर दिखा लाऊँ।

कालीमंदिर तक पहुँचने वाली कई गलियों में से एक को हमने पकड़ा और बोलते बतियाते, अगल बगल की फुटपाथी दुकानों में 60-70 रुपयों में बिकने वाले कपड़ों की यहाँ और वहाँ की कीमतों की तुलना करते-करते हमने एक पतली सड़क पार की और 5 मिनट में वहाँ पहुँचे जहाँ से 'कालीघाट पहुँच गये' वाली फीलिंग आने लगती है। काली-शंकर-हनुमान आदि की तरह-तरह की डिजाइनर मूर्तियों-तस्वीरों, शंखों, लाल-पीले धागों, लहठी-बाला-चूड़ी की चमकीली कतारों, सिंदूर की असंख्य छोटी-छोटी खुबसूरत डिबियों से भरी गुमटियों, उनके सामने मुँह लटकाये ऊँघते झड़े रोयें वाले बीमार कुत्तों और गुमटियों के उलटी तरफ सोये पड़े भिखारियों के बीच से गुजरते हुए हम मंदिर के एकदम पास पहुँचे। दिन गुरुवार था और वक्त दोपहर के पौने तीन बजे का शायद इसीलिए मंदिर के आस-पास 5-6 साल के कुछ ही फटेहाल बच्चे सड़क पर लोट-पोट होकर खेल रहे थे, इक्के-दुक्के लोग ही दिख रहे थे और साफ-सफाई भी अपेक्षाकृत अधिक थी। हम बस यहीं से लौट जाने के लिए आये थे लेकिन कम भीड़ और शांत माहौल देख कर यह देखने की थोड़ी-सी जिज्ञासा हुई कि मंदिर के भीतर क्या और कैसा है क्योंकि बाहर से तो कई बार देखा था लेकिन भीतर क्या चीज रखी हुई है जिसके दर्शन के लिए इतनी धक्का-मुक्की होती है यहां वह मैंने भी कभी नहीं देखी थी। पूजा वूजा करनी नहीं थी, सीरियसली घूमना भी नहीं था बस समय काटना था सो हम यूँ ही एक प्रवेश द्वार की तरह बढ़ने को हुए कि एक

. हमारे साथ चलते-चलते वह हमें निर्देश भी देने लगा। जो दरवाजा पहले मिला उसमें गये तो पाया कि मंदिर के उस हिस्से के छोटे से आँगन और सँकरी सीढ़ियों पर लंबी लाइन लगी थी। हमारे बिना पुछे ही वह बताने लगा कि इस लाइन में लग के दर्शन करने में चार घंटे लग जायेंगे लेकिन आपलोग चाहें तो वीआईपी गेट से तुरंत दर्शन करके निकल सकते हैं। मैंने वापस जाना चाहा लेकिन मेरे भाई को उसके वीआईपी गेट और भगवान के दर्शन करवाने के नाम पर चलने वाले धंधे को डिटेल में जानने- अनुभव करने में रूचि जगने लगी। वीआईपी गेट से दर्शन करने के झाँसे में आते देख काले दाँतों वाले ने प्रति व्यक्ति 50 रुपये की माँग की। भाई मान गया तो वह हमे पहले गेट से निकाल कर पतली गली से ले जाने लगा। इस बीच भाई ने उससे थोड़ा अनौपचारिक होने की कोशिश की—

आदमी जाने किधर से लपकता हुआ आया और हमें जूते उतारने को कहने लगा। मंदिर से जुड़ी भावना का सम्मान करने के लिए हमने अपने जूते-चप्पल उतारे और एक दुकानदार ने जहाँ इशारा किया वहाँ रख दिया। वह दुकानदार प्लास्टिक की पीली पड़ चुकी पिचकी हुई एक बोतल लिए हमारे हाथों में कुछ देने को हुआ। हमने नाक-भौं सिकोड़े तो उसने कहा कि बिना हाथ पवित्र किये हम नहीं जा सकते। छोटी सी बात थी सो हमने हाथ खोले। उसने पिचकी बोतल को और पिचका के ढक्कन मे किये हुए छेद से कुछ बूँद गंगाजल हमारी हथेलियों पर टपकायी। हैंड सैनिटाइजर मान कर हमने अपने हाथ पवित्र कर लिये और जैसे ही आगे बढ़ने लगे, उसने और लपक के आये आदमी ने फिर रोका। जवा फूलों की एक माला जबरदस्ती पकड़ाने लगा। हमने बताया कि हमें पूजा नहीं करनी है तो वह अपने काले-काले दाँत निपोरते हुए विनतीनुमा सलाह देने लगा कि अरे चढ़ा दीजिएगा एक माला तो क्या हो जायेगा और माला चढ़ाने के बहाने नजदीक से दर्शन कर लीजिएगा। उसकी सलाह मान कर हम माला लेने को राजी हुए तो दुकानदार ने माला के साथ लोहे के तार में प्लास्टिक की लाल कवर वाले 4 सेंटीमीटर अर्द्धव्यास वाले चार छल्ले यह कह कर पकड़ा दिये कि 'माँ' को बिना इस चूड़ी के फूल नहीं चढ़ा सकते और 40 रुपये माँगने लगा। उससे पीछा छुड़ाने के लिए चालीस रुपये चुका कर और फूलमाला, चूड़ी लेकर आगे बढ़े तो काले दाँतो वाला आदमी हमारे साथ लग गया।

. हमारे साथ चलते-चलते वह हमें निर्देश भी देने लगा। जो दरवाजा पहले मिला उसमें गये तो पाया कि मंदिर के उस हिस्से के छोटे से आँगन और सँकरी सीढ़ियों पर लंबी लाइन लगी थी। हमारे बिना पुछे ही वह बताने लगा कि इस लाइन में लग के दर्शन करने में चार घंटे लग जायेंगे लेकिन आपलोग चाहें तो वीआईपी गेट से तुरंत दर्शन करके निकल सकते हैं। मैंने वापस जाना चाहा लेकिन मेरे भाई को उसके वीआईपी गेट और भगवान के दर्शन करवाने के नाम पर चलने वाले धंधे को डिटेल में जानने- अनुभव करने में रूचि जगने लगी। वीआईपी गेट से दर्शन करने के झाँसे में आते देख काले दाँतों वाले ने प्रति व्यक्ति 50 रुपये की माँग की। भाई मान गया तो वह हमे पहले गेट से निकाल कर पतली गली से ले जाने लगा। इस बीच भाई ने उससे थोड़ा अनौपचारिक होने की कोशिश की—

- बिहार से हव का भैया?

-हँ दरभंगा ओरी के।

-अपने तरफ के बार तब त। डिस्काउंट ना देब का?

-देखिए हमरा पाकिट में नहीं न जायेगा कि डिस्काउंट देंगे। हमको का है कि आपसे पइसा लेंगे। गेट पर जो लोग है उ लेगा। हम नहीं लेगा।

थोड़ा आगे जाते ही वह कहने लगा कि पैसे निकालिये। भाई ने कहा कि गेट पे जो लेगा उसको देंगे तो वह झगड़ने की मुद्रा में आने लगा। उसकी तिलमिलाहट देख कर भाई ने उसे 100 रुपये दे दिये तब वह हमें एक चौड़े द्वार के पास ले गया जहाँ मेटल डिटेक्टर लगा था और सफेद वर्दी में पुलिस वाले बैठे थे। द्वार से होकर हम उसके पीछे-पीछे एक बड़े-से बरामदे में पहुँचे। बरामदे में 20-25 लोग थे। कुछ बैठे थे, कुछ खड़े थे, कुछ लेटे थे, कुछ दुर्गासप्तशति का पाठ कर रहे थे, कुछ अखबार पढ़ रहे थे, कुछ बरामदे के चक्कर काट रहे थे। बरामदे की धूल भरी फर्श पर कागज के टुकड़े और अगरबत्ती के खाली पैकेट बिखरे पड़े थे। काले दाँतों वाला आदमी हमें बरामदे की फर्श पर बैठने को कह कर हवा हो गया। हम फर्श पर बैठ कर उसका इंतजार करने लगे कि वह कहीं से जुगाड़ लगा कर हमें काली माता के दर्शन करवा दे। 10 मिनट बीतने पर भी वह नहीं आया तब कहीं जाकर हमें एहसास हुआ कि हमें सच में कालीघाट के दर्शन हो गये। बरामदे के बायीं तरफ के एक दरवाजे से दिख रहा था एक बंद दरवाजा जिसके सामने बहुत भीड़ थी। शायद वही वह दरवाजा था जिसके भीतर कालीघाट की काली माता बंद थीं। भीड़ लगाये लोग शायद उस दरवाजे के खुलने के इंतजार में थे।

हमने इधर उधर नजर दौडायी कि किसी से जानकारी लें कि दर्शन कब और कैसे होंगे। एक 'पंडी जी' दिखे जो बड़ी ही व्यस्तता से कुछ लड़कों को बरामदे के चारों कोनों की परिक्रमा करवा रहे थे। चारों कोनों की दीवारों पर काली जी की चार तस्वीरें लगी थीं फूल, अगरबत्ती की राख, सिंदूर और पानी से सनी हुई। पंडी जी हमारे पास से गुजरे तो हमने उनसे पूछा कि दरवाजा कब खुलेगा तो पंडी जी ने अरुचि से कहा '4 बजे' और कोने की तरफ बढ़ गये। अब हम टेंशन में आ गये क्योंकि अभी केवल सवा 3 बजे थे और हमें तुरंत निकल कर ऑटो स्टैंड पर घरवालों से मिलना था। फूलमाला और चूड़ी का क्या करें समझ नहीं आ रहा था। भाई ने सुझाया कि यहीं छोड़कर चले जाते हैं। लेकिन दुकान वाले ने प्लास्टिक की टोकरी में रख कर ये सारी चीजें हमें दी थी और हमारे चप्पल-जूते भी उसी के पास थे तो हम बिना टोकरी के जा भी नहीं सकते थे और फूलमाला और चूड़ी को यूँ ही फर्श पर रख कर श्रद्धालुओं की भावनाएं आहत करने का जोखिम भी नहीं उठा सकते थे। एक और पंडी जी के पास जाकर हमने अपनी समस्या बतायी तो पंडी जी भाई को साइड में ले जा कर बोले कि 200 रुपये दिजिएगा तो अभी तुरंत काली माता के दर्शन करवा देंगे। भाई ने कहा कि गेट तो 4 बजे खुलेगा तो पंडीत ने बताया कि उनकी स्पेशल सेटिंग है। वीआईपी एंट्री पा चुके हम भाई-बहन अब स्पेशल सेटिंग के चक्कर में आने का साहस खो चुके थे इसलिए अर्जेंट काम का हवाला देकर पंडी जी से छूटे और बरामदे के एक कोने की तस्वीर पर चूड़ी और माला रख कर वहाँ से वही पतली गली पकड़ के निकल लिये जिससे होकर आये थे।

मिथुन दा की एक फिल्म के एक गाने में है कहा गया है कि 'टालीगंज में टाली मिले न बालीगंज में बाली' और हमने यह देखा कि कालीघाट में काली भी नहीं मिलती बिना स्पेशल सेटिंग के.....

- प्रियंका सिंह

पूंजीपतियों का गुलाम वकील अरुण जेटली

-हिमांशु कुमार

पुलिस वाला आत्मरक्षा में किसी को मार दे तो उसे कोई सज़ा नहीं होती इसी तरह, अगर कोई नागरिक किसी को आत्म रक्षा करते हुए मार दे तो उसे भी सज़ा नहीं होगी। लेकिन कोई नागरिक जब किसी को आत्म रक्षा करते हुए मार डालता है तो इस बात का फैसला अदालत का जज करता है कि यह हत्या आत्म रक्षा के उद्देश्य से हुई थी या कहीं यह इरादतन हत्या तो नहीं थी ? पुलिस को हत्या के हर मामले को अदालत में ले जाना ही पड़ता है। हत्या करने वाले व्यक्ति को अदालत ही निर्दोष घोषित कर सकती है पुलिस नहीं। लेकिन इसी कानून के अंतर्गत जब पुलिस किसी नागरिक को जान से मार डालती है तो पुलिस खुद ही जज बन बैठती है।

पुलिस हत्या करने वाले अपने पुलिसवाले को आरोपी नहीं बनाती। पुलिस मरने वाले नागरिक को ही आरोपी बना देती है। फिर पुलिस कहती है, कि आरोपी तो मर गया। इस लिए मामला खत्म।

एक बार आंध्र प्रदेश के हाई कोर्ट ने एक फैसला दिया। कोर्ट ने कहा कि जब पुलिस और नागरिक के अधिकार बराबर हैं तो पुलिस वाले द्वारा किसी भी नागरिक की हत्या के मामले में पुलिस खुद ही कैसे जज बन जाती है ? कोर्ट ने फैसला दिया कि अब से पुलिस अगर किसी भी नागरिक को मारेगी तो उसे हत्या का मामला माना जाएगा। और उस मामले को पुलिस बंद नहीं कर सकेगी, बल्कि उस मामले को अदालत में पेश किया जायेगा। सिर्फ जज ही मुकदमा चलाने के बाद उस मामले को बंद करने का आदेश दे सकेगा। अब आपको तो पता ही है पुलिस की गोली से सबसे ज्यादा कौन लोग मरते हैं ?

सबसे ज्यादा मरते हैं अपनी जमीन बचाने की कोशिश करने वाले आदिवासी। अपनी झुग्गी झोंपड़ी बचाने की कोशिश करने वाले गरीब। बराबरी की मांग करने वाले दलित और मुसलमान। अपने अधिकार मांगने वाले मजदूर। ...और क्या आपको पता है कि पुलिस को इन्हें मार डालने का हुकुम देने वाले कौन लोग हैं ?

आदेश देने वाले होते हैं अमीर व्यपारी, उद्योगपति और विदेशी कंपनियों के एजेंट।

तो जैसे ही आंध्र प्रदेश हाई कोर्ट का यह फैसला आया। पूंजीपति हडबड़ा गए कि अब हमारे लिए आदिवासियों दलितों और मजदूरों पर गोली कौन चलाएगा ?

ऐसे तो हमारा मुनाफा कमाना मुश्किल हो जाएगा। हाई कोर्ट के इस फैसले के खिलाफ इन अमीरों का गुलाम एक वकील इस शानदार आदेश को लागू होने से रोकने के लिए सुप्रीम कोर्ट में खड़ा हो गया। ...और सुप्रीम कोर्ट में हाई कोर्ट के इस फैसले के खिलाफ मुकदमा कर दिया कि माई बाप इससे तो पुलिस का मनोबल गिर जाएगा। उस फैसले पर आज तक अमल नहीं होने दिया गया। आप जानना चाहेंगे कि पूंजीपतियों का वो गुलाम वकील कौन था ?

उस वकील का नाम अरुण जेटली था। विदेशी कंपनियों का वो एजेंट वकील आज भारत का वित्त मंत्री है। ...और सबसे भयानक बात यह है कि इसे भारत की जनता ने कभी भी चुना ही नहीं। यह शख्स कभी चुनाव ही नहीं जीता। फिर भी विदेशी कंपनियों के कहने से मोदी ने इसे भारत का वित्त मंत्री बना दिया है।

मतलब अब वित्त मंत्री बन कर विदेशी कंपनियों के लिए, भारत के विकास के नाम पर आदिवासियों की जमीन छीनो , और आदिवासी इसका विरोध करें तो आदिवासियों के खिलाफ भारत की सेना का इस्तेमाल करो और बंदूक के बल पर भारत की संपदा को लूटो और अमीरों और विदेशियों को सौंप दो।

पहले दस साल एक बिना चुनाव जीता हुआ प्रधानमंत्री भारत के सर पर बिठा दिया गया था मनमोहन सिंह भी कभी चुनाव नहीं जीते थे। अब एक बिना चुनाव जीते वित्त मन्त्री हमारे ऊपर बैठा दिया गया है। विश्व बैंक और बहुराष्ट्रीय कंपनियां जिसे चाहती हैं वह भारत का वित्त मंत्री बनता है। चाहे वह चुनाव जीते या न जीते। यह सहन करने वाले हालात नहीं हैं , इस सब को चुनौती देनी ही पड़ेगी।...

(हिमांशु कुमार सामाजिक कार्यकर्ता हैं और पालमपुर में रहते हैं)

एक वक्त था

एक वक्त था जब राजनेता सार्वजनिक रूप से धनपतियों से दूरी बनाए रखते थे। माना जाता था कि जो अमीर के साथ है तो स्वाभाविक तौर पर गरीब के खिलाफ है। बदनाम अमीर की तो छाया तक से राजनेता बचते थे। इस सबका समाज में अच्छा संदेश जाता था। लेकिन उदारवाद के बाद वक्त बदला। तौर-तरीका बदला। जो थोड़ी दबी-छुपी दखल होती थी पूंजीपतियों की, वो खुलेआम होने लगी। जोर की होने लगी। एक डेकोरम हुआ करता था। फिर धीरे-धीरे वो पर्दा भी हट गया। उदारवाद की आंधी में वो भी उड़ गया। पहले बहुत हुआ तो राजनेता फिक्की की अमीर उद्योगपतियों के समूह को संबोधित कर देते थे। पर अब इतना काफी नहीं था। अब उद्योगपतियों के अस्पताल के उद्घाटन कार्यक्रम से लेकर उसकी बेटी की शादी तक में राजनेता की हाजिरी कंपलसरी होने लगी। लाखों करोड़ डकारे हुए धनपशु के विज्ञापन के लिए पीएम हंसते हुए फोटो शूट करा सकते हैं। हजारों करोड़ चबा के लंदन में जुगाली कर रहा दूसरा धनपशु ब्रिटेन की इंडियन अंबेसी की पार्टी में ऑफिसियली गेस्ट बनता है। आपको कहीं कोई फर्क नहीं पड़ता। एक दो करोड़ों में होने वाली धांधली लाखों करोड़ के गबन और हड़पने तक पहुंच गई, आप नॉर्मल रहे। फाइनेंस मिनिस्टिर, यूनियन टेरिटरीज के गवर्नर से लेकर रिजर्व बैंकके गवर्नर तक अपने आदमियों को खुल्लम-खुल्ला बिठाया जाने लगा, आप इसे मामूली लॉबिंग और लाइजनिंग बोलते रहे। दूसरी तरफ कुछ गरीब लोग एक सभा के बाद चारपाई लेकर चले गए या स्टेशन से एक पंखा खोल लिया तो आप कहते हो- हाउ चीप एंड ग्रीडि दे आर!! सारा आइडियलिज्म आपने इस देश के गरीबों के लिए छोड़ दिया है क्या?

- कमल किशोर